गणकतरङ्गिणी(?) — ग्रहलाघवम्

शास्त्री-III

नक्षत्रच्छायाधिकारः

Date 13.12.20
Page 1

नक्षत्रोदयास्तलग्नाभ्यां रात्रिगतकालसाधनप्रकारः —

उद्यद्भध्रुवकः स्वदेशजोऽस्तं वा प्राग्युक्तः सषड्गृहः।
स्यात्तत्कालविलग्नकं ततः प्राग्वत्स्युर्घटिका निशागताः॥

अन्वयः— स्वदेशजः उद्यद्भध्रुवकः वा अस्तम् प्राग्युक्तः सषड्गृहः, तत्कालविलग्नकं स्यात् ततः प्राग्वतः निशागताः घटिकाः।

तारा— स्वदेशजः स्वदेशीयोदयः, उद्यद्भध्रुवकः वा अस्तं प्राग्युक्तः गच्छतः, ध्रुवो भवति। सषड्गृहः षड्राशियुक्तो ध्रुवकः, तत्कालविलग्नकं स्यात्। ततः प्राग्वत् तस्माद्भान्वितार्कमध्ये श्लोकोक्तप्रकारेण निशागताः रात्रिगताः, घटिकाः स्युः।

भावार्थः— उदय होनेवाले नक्षत्र का जो स्वदेशीय उदय ध्रुव हो, वही उसका उदयलग्न होता है और अस्त होनेवाले नक्षत्र के स्वदेशीय अस्त ध्रुव में ६ राशि जोड़ देने से उस नक्षत्र का अस्तलग्न होता है। इसीके द्वारा पूर्वोक्त रीति से रात्रिगत-घटिका होती है।

डॉ॰ सुदिष्ट कुमार
सहा॰ प्राचार्य (ज्योतिष)
रा॰ उ॰ सं॰ महावि॰ सुखसेना,
पूर्णियाँ।

शास्त्री-III

Date 13.12.20
Page 4

युतेर्गतैष्यदिवसज्ञानप्रकार :—

ऋजुगतिखगयोस्तु वक्रयोर्वा विवरकलागतिजान्तरेण भक्ताः।
गतिजयुतिहृता यदैकवक्री युतिरगता प्रगतात्तवासरैः स्यात्॥

अन्वयः— ऋजुगतिखगयोः वा वक्रयोः विवरकलाः गतिजान्तरेण, भक्ताः यदा एकवक्री गतिजयुतिहृता आप्तवासरैः अगता प्रगता युतिः स्यात्।

तारा— मार्गगतिवर्तोर्ग्रहयोः किं वा वक्रयोः, विवरकलाः गतिजान्तरेण गतिकलान्तरेण भक्ताः, यदा एकवक्री ग्रहः, अन्यो मार्गगतिः स्यात्, तदा गतिजयुतिहृता आप्तवासरैः, अगता गम्या, प्रगता एष्या, युतिः स्यात्।

भावार्थः— यदि दोनों ग्रह मार्गी अथवा वक्री हों तो उन दोनों ग्रहों के अन्तर की कलाओं में गति के अन्तर का भाग दें। यदि एक ग्रह वक्री हो और दूसरा ग्रह मार्गी हों तो इन दोनों ग्रहों के अन्तर की कलाओं में गति के योग का भाग दें। जो लब्धि मिले, उसके अंको की संख्या के समान दिनों में उन दोनों ग्रहों की युति होगी अथवा हो चुकी है।

डॉ० सुदिप्त कुमार
सहा० प्राचार्य (ज्योतिष)
रा० उ० सं० महावि०, सुखसेना,
पूर्णियाँ।

युतेर्गत-गम्य-ज्ञानप्रकार:—

अधिकजवखगेऽधिकेऽल्पभुक्तेरथ कुटिलेऽल्पतरेऽनुलोमतो वा।
अनृजुगयखगयोस्तु शीघ्रगेऽल्पे युतिरनयो: प्रगताऽन्यथातु गम्या॥

अन्वय:— अनयो: अधिकजवखगे अल्पभुक्ते अधिके अथवा कुटिले अनुलोमत: अल्पतरे अनृजुगयखगयो: तु शीघ्रगे अल्पे युति: प्रगता अन्यथा गम्या।

तारा-ग्रयोर्ग्रहयो: युति: साध्या:, अनयो: अधिकजवखगे अधिकवेगवति ग्रहे, अल्पभुक्ते: अधिकेसति, अथवा कुटिले वक्रे ग्रहे, अनुलोमत: मार्गगतिवतो ग्रहात्, अल्पतरे सति, अनृजुगयखगयो तु शीघ्रगे अल्पे सति, युति: प्रगता, अन्यथा युति: गम्या वाच्या।

भावार्थ:— जिन दो ग्रहों की युति का गणित करना हो, उनमें यदि अधिक गति वाला ग्रह अल्पगतिवाले ग्रह की अपेक्षा वक्रगतिवाला ग्रह अंशादि अवयवों से अधिक हो अथवा मार्ग-गतिवाले ग्रह की अपेक्षा वक्रगतिवाला ग्रह अंशादि अवयवों से कम हो अथवा अधिक वक्रगतिवाले ग्रह की अपेक्षा वक्रगति-वाला ग्रह अंशादि अवयवों से कम हो, तो युति को गत समझें और यदि इस लक्षण में विपरीतता हो, तो ग्रहयुति को गम्य (होनेवाली) समझें।

डॉ० युधिष्ठिर कुमार
सहा० प्राचार्य (ज्यौतिष)
रा०उ०सं०महावि० सुखसेना,
पूर्णियाँ।

कुजादिग्रहबिम्बसाधनप्रकार :—

पञ्चर्त्वेगाङ्कविशिखाः पृथगीशकर्ण-
योगाहताः प्रकृतिभान्वरिसिद्धरामैः।
भक्ताः फलेन सहिताः श्रवणेऽधिकोने
ते त्र्युद्धृताः स्युरसृजो वपुरङ्गुलानि॥

अन्वयः— पञ्चर्त्वेगाङ्कविशिखाः पृथक् ईशकर्णयोगाहताः प्रकृतिभान्वरिसिद्धरामैः भक्ता श्रवणे अधिकोने फलेनसहिताः ते त्र्युद्धृताः असृजः वपुरङ्गुलानि स्युः।

तारा— पञ्चर्त्वेगाङ्कविशिखाः अङ्काः क्रमेण— ५, ६, ७, ९, ५ पृथक्, ईशकर्णयोगाहताः एकादशशीघ्रकर्णान्तरगुणिताः तथा प्रकृतिभान्वरिसिद्धरामैः २१, १२, ६, २४, ३ भक्ताः श्रवणे ईशतोऽधिकोने, फलेनसहिताः फलेन ऊनाः सहिताः वा ते त्र्युद्धृताः असृजः भौममारभ्य ग्रहपञ्चकस्य, वपुरङ्गुलानि बिम्बाङ्गुलानि, स्युः।

भावार्थः— मंगल आदि शनिपर्यन्त पाँच ग्रहों में से जिसका बिम्बसाधन करना हो उसके शीघ्रकर्ण और ११ अंश का अन्तर करें। उस अन्तर को इष्ट ग्रह के नीचे लिखे हुए बिम्बाङ्क से गुणा करें। जो गुणनफल मिले, उसमें भाज्यांक का भाग दें। यदि शीघ्रकर्ण ११ अंशों की अपेक्षा अधिक हो तो भाज्याङ्क का भाग देने से प्राप्त लब्धि को बिम्बांक में से घटा दें। यदि शीघ्रकर्ण ११ अंशों से कम हो तो उस लब्धि को बिम्बांक में जोड़ दें। जो योगफल मिले, उसमें ३ का भाग दें। जो लब्धि मिले, वह मंगल आदि ग्रहों का अंगुलादिबिम्ब होता है।

मंगल आदि ग्रहों के बिम्बांक— मंगल ५, बुध ६, गुरु ७, शुक्र ९, शनि ५। भाज्यांक— मंगल २१, बुध १२, गुरु १६, शुक्र २४, शनि ३।